

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्हणभरतशक्रहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे राल्मीकीये आदिकार्ये सुन्दरकाण्डे

॥ अष्टादशः सर्गः ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ अष्टादशः सर्गः ॥

स्वकीयस्त्रीभिः परिवृतस्य रारणस्याशोकनिकायामागमनं हनुमता
तस्य दर्शनं च

तथा रिप्रेक्ष्यमाणस्य रनं पुष्पितपादपम्।
रिचिन्त्रतश्च रैदेहीं किष्किच्छेषा निशाभरं ॥ 5.18.1 ॥

षडङ्गरेदरिदुषां क्रतुप्रररयार्जिनाम्।
शुश्रार ब्रम्हघोषान् स रिरात्रे ब्रम्हरम्हसाम् ॥ 5.18.2 ॥

अथ मङ्गलरादित्रैः शब्दैः श्रोत्रमनोहरैः।
प्रारोध्यत महाबाहृर्दशग्रीरो महाबलः ॥ 5.18.3 ॥

रिबुध्य तु महाभागो राम्हसेन्द्रः प्रतापरान्।
श्रुस्तमाल्याम्बरधरो रैदेहीमन्त्रचिन्तयं ॥ 5.18.4 ॥

भृशं निरुक्तस्तस्यां च मदनेन मदोत्कटः।
न तु तं राम्हसः कामं शशाकात्मानि गूहितुम् ॥ 5.18.5 ॥

स सर्वाभरणैर्युक्तो विभ्रच्छ्रियमनुत्तमाम्।
तां नगैरिरीरिधैर्जुष्टां सर्रपुष्पफलोपगैः ॥ 5.18.6 ॥

रूतां पुष्करिणीभिश्च नानापुष्पोपशोभिताम्।
सदा मत्तेश्च रिहगैरिचित्रां परमाद्भुतैः ॥ 5.18.7 ॥

स्रहामृगैश्च रिरीरिधैरूतां दृष्टिमनोहरैः।
रीथीः सम्प्रेक्षमाणश्च मणिकाञ्चनतोरणाम् ॥ 5.18.8 ॥

নানামৃগগণাকীর্ণাং ফলৈঃ প্রপতিতৈৰ্বৃতাম্।
অশোকরনিকামের প্রাশিশং সন্ততক্রমাম্ ॥ 5.18.9 ॥

অঙ্গনাঃ শতমাত্রং তু তং ব্রজন্তমনুব্রজন্।
মহেন্দ্রমির পৌলস্ত্যং দেবগন্ধর্ষোষিতঃ ॥ 5.18.10 ॥

দীপিকাঃ কাঞ্চনীঃ কাশ্চিড্ভ্জগৃহ্স্থত্র যোষিতঃ।
রালর্যজনহস্তাশ্চ তালবৃন্তানি চাপরাঃ ॥ 5.18.11 ॥

কাঞ্চনৈশ্চৈর ভূঙ্গারৈর্জহুঃ সলিলমগ্রতঃ।
মণ্ডলাগ্রা বৃসীশ্চৈর গৃহ্যান্যাঃ পৃষ্ঠতো যযুঃ ॥ 5.18.12 ॥

কাচিদ্ রত্নমযীং পাত্রীং পূর্ণাং পানস্য ভ্রাজতীম্।
দক্ষিণা দক্ষিণেনৈর তদা জগ্রাহ পাণিনা ॥ 5.18.13 ॥

রাজহংসপ্রতীকাশং ছত্রং পূর্ণশশিপ্রভম্।
সৌরর্ণদণ্ডমপরা গৃহীৎরা পৃষ্ঠতো যযৌ ॥ 5.18.14 ॥

নিদ্রামদপরীতাক্ষ্যা রারণস্যোত্তমস্ত্রিযঃ।
অনুজগ্মুঃ পতিং রীরং ঘনং রিদ্যুল্লতা ইর ॥ 5.18.15 ॥

র্যারিদ্ধহারকেযুরাঃ সমামৃদিতর্র্ণকাঃ।
সমাগলিতকেশান্তাঃ সস্বেদরদনাস্তথা ॥ 5.18.16 ॥

ঘূর্ণন্ত্যো মদশেষেণ নিদ্রযা চ শুভাননাঃ।
স্বেদক্লিষ্টাঙ্গকুসুমাঃ সমাল্যাকুলমূর্ধজাঃ ॥ 5.18.17 ॥

প্রযান্তং নৈরুতপতিং নার্যো মদিরলোচনাঃ।
বহ্মানাচ্চ কামাচ্চ প্রিযভার্যাস্তমন্ত্রযুঃ ॥ 5.18.18 ॥

স চ কামপরাধীনঃ পতিস্তাসাং মহাবলঃ।
সীতাসক্তমনা মন্দো মন্দাঞ্চিতগতির্বভৌ ॥ 5.18.19 ॥

ততঃ কাঞ্চীনিদাং চ নূপুরাণাং চ নিঃস্বনম্।
শুশ্রার পরমস্ত্রীণাং কপির্মারুতনন্দনঃ ॥ 5.18.20 ॥

তং চাপ্রতিমকর্মাণমচিন্ত্যবলপৌরুষম্।
দ্বারদেশমনুপ্রাপ্তং দদর্শ হনুমান্ কপিঃ ॥ 5.18.21 ॥

দীপিকাভিরনেকাভিঃ সমন্তাদরভাসিতম্।
গন্ধতৈলারসিক্তাভির্ধ্রিয়মাণাভিরগ্রতঃ ॥ 5.18.22 ॥

কামদর্পমদৈর্যুক্তং জিহ্মতাম্রায়তেক্ষণম্।
সমক্ষমির কন্দর্পমপরিদ্ধশরাসনম্ ॥ 5.18.23 ॥

মথিতামৃতফেনাভমরজোরঙ্গমুত্তমম্।
সপুষ্পমরকর্ষন্তং রিমুক্তং সত্তমঙ্গদে ॥ 5.18.24 ॥

তং পত্ররিটপে লীনঃ পত্রপুষ্পশতাবৃতঃ।
সমীপমুপসঙ্কান্তং রিজাতুমুপচক্রমে ॥ 5.18.25 ॥

অরেক্ষমাণস্তু তদা দদর্শ কপিকুঞ্জরঃ।
রূপযৌরনসম্পন্না রারণস্য ররস্ত্রিয়ঃ ॥ 5.18.26 ॥

তাভিঃ পরিবৃত্তো রাজা সুরূপাভির্মহাযশাঃ।
তন্মৃগদ্বিজসঙ্ঘুষ্টং প্ররিষ্টঃ প্রমদারনম্ ॥ 5.18.27 ॥

ক্ষীবো রিচিত্রাভরণঃ শঙ্কুকর্ণো মহাবলঃ।
তেন রিশ্ররসঃ পুত্রঃ স দৃষ্টো রাম্ফসাধিপঃ ॥ 5.18.28 ॥

বৃত্তঃ পরমনারীভিস্তারাভিরির চন্দ্রমাঃ।
তং দদর্শ মহাতেজাস্তেজোরন্তং মহাকপিঃ ॥ 5.18.29 ॥

রারণোহয়ং মহাবাহুরিতি সঞ্চিন্ত্য রানরঃ।
 সোহযমের পুরা শেতে পুরমধ্যে গৃহোত্তমে।
 অরপ্লুতো মহাতেজা হনুমান্ মারুতাত্মজঃ ॥ 5.18.30 ॥

স তথাপ্যুগ্রতেজাঃ স নির্ধূতস্তস্য তেজসা।
 পত্রে গুহ্যান্তরে সক্তো মতিমান্ সংবৃতোহভবৎ ॥ 5.18.31 ॥

স তামসিতকেশান্তাং সুশ্রোণীং সংহতস্তনীম্।
 দিদৃক্ষুরসিতাপাসীমুপার্তত রারণঃ ॥ 5.18.32 ॥

॥ ইত্যর্ষে শ্রীমদ্রামায়ণে রাল্মীকীযে আদিকাণ্ডে সুন্দরকাণ্ডে অষ্টাদশঃ সর্গঃ ॥